

सातवें राष्ट्रीय कन्या अधिवेशन का प्रारंभ

लक्ष्य बनाकर जीयें : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूँ, 19 जून।

वर्तमान में क्या हो रहा है और क्या होना चाहिए हमें सारे विश्व के संदर्भ में अपने आपको देखना चाहिए। आज व्यक्तित्व निर्माण के प्रति बहुत आकर्षण है। व्यक्तित्व पर विचार करें और निमित्तों पर ध्यान दें जिससे अपने व्यक्तित्व का निर्माण करना है। रहन-सहन कैसा हो? वेशभूषा कैसी हो? केवल प्रवाह में न जाएं। अच्छे व्यक्तित्व के लिए कौनसी वेशभूषा मान्य होती है। रहन-सहन, खान-पान आदि इन छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना चाहिए।

उक्त विचार आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में त्रिदिवसीय सातवें राष्ट्रीय कन्या मण्डल के अधिवेशन के प्रारंभ सत्र “आनन्दो में वर्षति-वर्षति” को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जब छोटी बातों पर ध्यान नहीं देते तो व्यक्तित्व कभी महान नहीं बनता। छोटी बातों पर ध्यान नहीं देता उसका व्यक्तित्व कभी महान नहीं बनता। व्यक्तित्व को महानता की दिशा में आगे ले जाना है छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना सीखें उठने से लेकर सोने तक जीवनचर्या की होने वाली छोटी-छोटी बातों को बड़ी जागरूकता के साथ देखना सीखें।

आचार्य महाप्रज्ञ ने उपस्थित कन्याओं को जीवन का लक्ष्य बनाकर जीने की प्रेरणा दी। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि दो लक्ष्य होते हैं एक जीवन का लक्ष्य और दूसरा आजीविका का लक्ष्य। लक्ष्य का निर्धारण प्रारंभ से ही हो तो अच्छा जीवन बन सकता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि मुझे ऐसा लगा कि दुःख से जो आदमी घबराता है कठिनाइयों से घबराता रहता है यह घबराहट आनन्द की प्राप्ति में एक बाधा है। हमारे में इतनी धैर्यता न आए कि हम छोटे-बड़े कष्ट को भी झेल न सकें। घबराहट नहीं होनी चाहिए निर्भिकता का भाव पुष्ट होना चाहिए। निर्भिकता है तो अखण्ड आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि दूसरों के कल्याण का हित का प्रयास करना स्वयं पर आनन्द की वर्षा कराने का उपाय है जो आदमी दूसरों का अहित सोचता है दूसरों को अहित करता है तो मानना चाहिए कि व्यक्ति अपने लिए दुःख को मोल ले रहा है और आनन्द को दूर करने का प्रयास कर रहा है। हम दूसरों का भला करें, कल्याण करें किसी को दिखाने के लिए नहीं अपितु भला किया उसे भूल जाएं। जब दूसरों का कल्याण करना सीख लेंगे और दूसरों का भला करने का प्रयास करेंगे तो आनन्द की वर्षा हो सकेगी। व्यक्ति में विनम्रता का भाव जागे आवेश में न जाएं तो अखण्ड आनन्द रह सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा ने कहा कि कोई भी काम करें चितनपूर्वक करें चिंतन पूर्वक किया गया काम और कोई भी परिस्थिति आए। अपने आप में जीने का लक्ष्य बनाएं। भाग-दौड़ की जिंदगी में कुछ पल अपने लिए बचाकर रखेंगे, अपने साथ रहने का अभ्यास करेंगे, अपने आप में जीने का लक्ष्य बनाएंगे उस आनन्द को कोई छिन नहीं सकता जिनन्दी के पल इस रूप में जियें कि वे पल

आनन्दमय बने और हमारे जीवन को आनन्दित करते रहें। इसके लिए कुछ ऐसे काम करें परिवार, समाज, देश के लिए कि हमें आनन्द की अनुभूति हो सके।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि जिस आनन्द की खोज हम बाहर करना चाहते हैं वह आनन्द हमारे भीतर के जगत में है उसको पाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ेगा। यदि किसी ने पंखा चला दिया आनन्द आ गया लेकिन वह आनन्द स्थायी नहीं है, जब तक पंखा चलता है या ठण्डक आती है तब तक आनन्द है वह तात्कालिक आनन्द है स्थायी आनन्द नहीं है। जो भीतर से प्रस्फुटित होता है वह आनन्द स्थायी आनन्द होता है। उस स्थायी आनन्द को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ होना चाहिए।

साध्वी कल्पलता ने कहा कि युग नकारात्मक की ओर जा रहा है उसे सकारात्मक बनाने का प्रयास किया जा रहा है जो अपने आप में सराहनीय है।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोभाग बैद ने कहा कि अपने आपमें मधुरता हो, शक्तिशाली बनने के लिए अनुप्रेक्षा और मंत्रों का जाप हो तो कन्याएं अपने आपको शक्तिशाली बनने की दिशा में आगे बढ़ सकती हैं।

इस अवसर पर सुश्री आरती चौपड़ा ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। लाडनूं की तेरापंथ कन्या मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय अध्यक्षा व महामंत्री ने बड़े व छोटे क्षेत्रों में कार्य की दृष्टि से बड़े क्षेत्रों में नंबर पर मुंबई कन्या मण्डल, मध्यम क्षेत्र में प्रथम नोखा व छोटे में चिकमंगलूर कन्या मण्डल को प्रतिक चिन्ह भेंट किया।

इसी श्रृंखला में राष्ट्रीय अध्यक्षा सोभाग बैद, महामंत्री वीणा बैद ने आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण एवं साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा को महिला मण्डल की किट भेंट की। कार्यक्रम का संचालन कन्या मण्डल संयोजिका श्रीमती नीलम बोरड़ ने किया।